RECENT RESEARCHES in
SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES

Issue : 2, Year : 4
Jul.-Aug.-Sep. (2017), Pages : 142 - 146
ISSN 2348 – 3318

International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना की परम्परा (चारण काल से छायावाद तक)

कमलेश कुमार मिश्र
प्रवक्ता
रा0इ0का0 दिउसी
कल्जीखाल पौड़ी उत्तराखण्ड

Received : 04/05/2017 *1st BPR* : 10/05/2017 *2nd BPR* : 01/06/2017 *Accepted* : 15/06/2017

ABSTRACT

भक्ति आन्दोलन ने समूचे राष्ट्र को एक सूत्र में आबद्ध किया। भक्ति के रस भीने वातावरण में सुधारवाद, मर्यादावाद और आदर्शवाद को ही प्रधान्य मिला और परिणाम यह हुआ कि राष्ट्रीय चेतना की भावना हिन्दुत्व से आगे नहीं बढ़ सकी। भक्तिकाल में आध्यात्म की वेदी पर समूचा हिन्दुस्तान एक अस्पष्ट सीमा में बंध गया। किन्तु भक्ति के कहे जाने वाले स्वर्णयुग में देश प्रेम की कविताओं का अभाव खटकता रहा। आधुनिक अर्थ में राष्ट्रीय चेतना का विकास अंग्रेजों द्वारा देश की केन्द्रीय सत्ता को शनैः शनैः हस्तगत कर लेने के बाद हुआ। स्पष्टतया विभिन्न आयामों में राष्ट्रीयता छायावाद की प्रखर भावभूमि पर पल्लवित हुई है, जो अपनी पूर्वकालीन राष्ट्रीयता से कही अधिक ठोस स्पष्ठ और शाश्वत है। सन् 1936 से भारत की स्वतंत्रता तक यह राष्ट्रीय काव्यधारा शाश्वत गतिमान रही, जिसने राष्ट्रवादी भावनाओं को प्रखर करने का कार्य किया। चारण काव्य के बाद वस्तु जगत को नवीन पुरूषार्थ राष्ट्रीय काव्य से मिला। भारतीयता को पोषित करने में हिन्दी राष्ट्रवादी काव्य की महत्ति भूमिका है।

विश्व में राष्ट्रवाद आज एक प्रभावी शक्ति है, आखिर राष्ट्र क्या है? लोग राष्ट्रों का निर्माण क्यों करते हैं? और राष्ट्र क्या करने की तीव्र इच्छा जगाते हैं। लोग अपने राष्ट्र के खातिर प्राण न्यौछावर करने के लिए क्यों तत्पर रहते हैं ?

राजनैतिक चिन्तक ई0 बार्कर के अनुसार राष्ट्र उन लोगों का समूह है, जो किसी निश्चित प्रदेश में वास करते हैं, जो सामान्यतः भिन्न नस्लों के होते हैं, लेकिन साझे इतिहास के दौर में अर्जित व सम्प्रेषित विचारों व भावनाओं की साझी विरासत रखते हैं, जो समग्र रूप में तथा अतीत की अपेक्षा वर्तमान में अधिक साझी धार्मिक आस्था भी शामिल करते हैं, जो सामान्यतः एक परिपाटी के रूप में विचारों एवं भावों को प्रेरित करने हेतु साझी भाषा का प्रयोग करते हैं, जो साझी इच्छा को बनाये रखते हैं, तथा तद्नुसार उस इच्छा की अभिव्यक्ति के लिए एक पृथक राज्य बनाने का प्रयास करते हैं।

डॉ0 वासुदेव शरण अग्रवाल के शब्दो में–भूमि, भूमिवासी जन और जनसंस्कृति –तीनों के सम्मिलन से राष्ट्र का स्वरूप बनता है। भूमि अथवा भौगौलिक एकता जन अर्थात जन गण की राजनैतिक एकता और जन संस्कृति अर्थात सांस्कृतिक एकता तीनों के समन्वय का नाम राष्ट्र है।

डॉ0 रामविलास शर्मा के अनुसार राष्ट्र का सीधा सम्बन्ध जन गण से है–वैदिक काल से जनपद उन जनों के निवास थे, जो रक्त सम्बन्ध के आधार पर सम्बद्ध थे, बाद में पूंजीवाद के आगमन से जाति, तदुपरान्त लघु जाति और महाजाति का विकास हुआ।[1]

वर्गेस ने राष्ट्र को परिभाषित करते हुए लिखा है ''राष्ट्र जातीय एकता के सूत्र में बंधी हुई वह जनता है जो अखण्ड भौगौलिक प्रदेश में निवास करती है''।

ब्राइस के अनुसार ''राष्ट्र एक राष्ट्रीयता है जिसने अपना संगठन एक राजनैतिक संस्था के रूप में कर लिया है और जो स्वाधीन हो अथवा स्वाधीनता का इच्छुक हो।[2]

''राष्ट्र' अंग्रेजी शब्द नेशन का हिन्दी रूपान्तरण है, नेशन शब्द की उत्पति नेशिया नामक लैटिन शब्द से हुई है, लैटिन शब्द नेशिया का अर्थ जन्म लेना या पैदा होना होता है, व्यक्तियों के दृष्टिकोण से राष्ट्र का सम्बन्ध एक जाति या नस्ल से है। जाति का अर्थ वैसे व्यक्तियो के समूह से है, जो परस्पर वंश या नस्ल के हों। जब ऐसा समूह राजनैतिक संगठन का रूप धारण कर लेता है तो उसे राष्ट्र कहते हैं।

राष्ट्रीय चेतना में आत्म सम्मान एवं गौरव का विषय राष्ट्र होता है, राष्ट्रीय चेतना में राष्ट्र के लिए कार्य किया जाता है। राष्ट्रीय चेतना व्यक्तिगत स्वार्थ से रहित होती है और सदैव प्रशंसनीय बनी रहती है।

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 2, Year : 4, Jul.-Aug-Sep. (2017), Pages : 142-146 , ISSN 2348 – 3318
कमलेश कुमार मिश्र
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

राष्ट्रीय चेतना देश प्रेम की भावना जगाकर नागरिकता को सजीव रूप प्रदान करती है, यह प्रत्येक व्यक्ति में आत्म सम्मान एवं गौरव की भावना भरता है। संकट काल में इसी भावना से राष्ट्र एक हो जाता है। राष्ट्रवाद ने साम्राज्यवाद को खत्म करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।[3]

चेतना चैतन्यता की स्थायी अवस्था है, सिद्धान्ततः राष्ट्रवाद एक वांछनीय धारणा है। सामाजिक एकता बढाने की दृष्टि से देखें, तो राष्ट्रवाद के समान अन्य कोई भावना किसी देश को एकता में नही बाँध सकती है। आन्तरिक कलह व द्वेष से पीड़ित देशों को कितनी ही बार राष्ट्रवाद ने एक झण्डे के नीचे लाकर खड़ा कर दिखा है। राष्ट्रीय संकट के समय राष्ट्र प्रेम ने कितनी ही बार देश के सभी नागरिकों को कंधे से कन्धा मिलाकर चलने को प्रेरित किया है। राष्ट्रवाद से प्रेरित होकर त्याग एवं वीरता के जो कार्य किये गये हैं, उसमें सभी देशों के इतिहास के पन्ने भरे पडे हैं, राष्ट्रीय चेतना के कारण शासन व्यवस्था का पालन लोग स्वतः ही करते हैं।

राष्ट्रीय चेतना विश्व के समस्त राष्ट्रों के विकास की प्रतिस्पर्धा में उत्प्रेरक का कार्य करती है, राष्ट्रीय चेतना में आत्मगौरव एवं स्वाभिमान का विषय राष्ट्र होता है, राष्ट्रीय चेतना में राष्ट्र का हित सर्वोपरि समझा जाता है।

हिन्दी साहित्य वीरगाथा काल से आधुनिक काल तक तेरह सौ वर्षो का इतिहास समेटे हुए है, जिसमें राष्ट्रीय चेतना (भावना) स्पष्टतः तो कही परोक्ष रूप से दृष्टिगोचर होती है।

वीरगाथा काल में राष्ट्रीय एकता की भावना का पूर्ण अभाव था। देश में सैकडों राज्य थे, सभी अपने–अपने राज्यों को श्रेष्ठ समझते थे। तत्कालीन काव्य में वीर रस की उदार भावना कम थी। यद्यपि उस काल की वीरता में राष्ट्रीयता नहीं थी, तथापि अपनी बात के लिए निर्भयतापूर्वक आत्म बलिदान करना, शरणागत की रक्षा करना, स्त्रियों और पुरूषों को प्रोत्साहित किये जाने के भाव सराहनीय हैं।[4]

डॉ0 नगेन्द्र के शब्दो में मध्ययुग में विदेशी आक्रान्ता के विरूद्ध प्राणों पर खेलकर लड़ने वाले राजपूत वीरों का यशोगान करने वाली वीरगाथा काल की कविता की कोटि निश्चित ही देशभक्ति की कविता की कोटि में आती है, परन्तु उस युग में एक तो यह भावना अत्यन्त विरल है, दूसरी यह देशभक्ति के वर्तमान स्वरूप से भी अत्यन्त भिन्न है।

''वीर रस की कविता समय सापेक्ष होती है। फलतः वीरगाथा काल की राष्ट्रीयता वीरपूजा का पर्याय बन गयी, जहाँ राष्ट्र का नहीं व्यक्ति की वीरता का महत्व है। धर्म का नहीं, व्यक्ति के कर्म और संकुचितता का परितोश है। विशाल समाज का स्वर नहीं निश्चित भू भाग ही सर्वस्व है। युद्ध काव्य के अन्तर्गत आने वाली निम्नलिखित पंक्तियां दृष्टव्य है–

बारह बरस ले कूकुर जिये और तेरह ले जिये सियार।
बरस अठारह छत्री जिये आगे जीवन को धिक्कार।[5]

वीरगीत काव्यों में सर्वाधिक लोकप्रिय काव्य जगनिक कृत ''परमाल रासो'' हैं, जिसे आल्हा खण्ड भी कहते हैं। इस काव्य में महोबे के दो प्रसिद्ध वीरों आल्हा और ऊदल के वीर चरित्रों का वर्णन है, जो आज भी वर्षा ऋतु में उत्तरी भारत के गाँवों में गाया जाता है। वीरगाथा काल में राष्ट्रीय चेतना की भावना राज्य अथवा रियासत तक ही सीमित थी।

भक्ति आन्दोलन ने समूचे राष्ट्र को एक सूत्र में आबद्ध किया। इसने राष्ट्रीयता के संवर्धन में योगदान तो किया परन्तु उसका स्वरूप व्यापक नहीं रहा। भक्ति के रस भीने वातावरण में सुधारवाद, मर्यादावाद और आदर्शवाद को ही प्रधान्य मिला[6] और परिणाम यह हुआ कि राष्ट्रीय चेतना की भावना हिन्दुत्व से आगे नहीं बढ़ सकी। भक्तिकाल में आध्यात्म की वेदी पर समूचा हिन्दुस्तान एक अस्पष्ट सीमा में बंध गया। किन्तु भक्ति के कहे जाने वाले स्वर्णयुग में देश प्रेम की कविताओं का अभाव खटकता रहा।

आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र रीतिकाल के कवियों में राष्ट्रीयता के अभाव को स्वीकार करके इसे वीरकाव्य का द्वितीय उत्थान मानते हैं। श्री मिश्र ने इस उत्थान में पाँच प्रकार की पद्धतियां गिनाई हैं–

1. शुद्ध वीर काव्य
2. रासो पद्धति का श्रृंगार मिश्रित वीर काव्य
3. वीर देवकाव्य या भक्ति भावित वीर काव्य
4. अनूदित वीर काव्य
5. दरबारी कवियों का प्रकीर्य वीर काव्य[7]

तत्कालीन समय में छत्रपति शिवाजी छत्रशाल और गुरूगोविन्द सिंह जैसे वीरों की सराहना में फडकती हुई रचनाओं की आवश्यकता थी। अतः भूषण, श्रीधर, लाल, सूदन और पदमाकर जैसे कवियों ने रीति काल में परम्परा के विरूद्ध ओजस्विनी रचनाऐं सुनाई। भूषण ने समसामाजिक परिस्थितियों को परखकर श्रृंगार के सामने वीर रस रखा। शिवाजी के अनुकरण पर उन्होने सारे समाज को संगठित कर दिया। रीतिकालीन राष्ट्रीय भावना वीरगाथाकालीन वीर भावना से अधिक प्रशस्त है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि वीरगाथा से लेकर रीतिकाल तक हिन्दी काव्य में राष्ट्रीयता की भावना क्रमिक विकास की सीढ़ियों को लांघकर सर्वथा एक नये मोड़ पर पहुँचती है, जहाँ व्यक्ति, जाति और सम्प्रदाय विशेष रूप से अलग भारतेन्दु काल की पृष्ठभूमि में राष्ट्र की स्वतंन्त्रता की ओर प्रयाण करती है।

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 2, Year : 4, Jul.-Aug-Sep. (2017), Pages : 142-146 , ISSN 2348 – 3318

International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

आधुनिक अर्थ में राष्ट्रीय चेतना का विकास अंग्रेजों द्वारा देश की केन्द्रीय सत्ता को शनैः शनैः हस्तगत कर लेने के बाद हुआ। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने जीवन और साहित्य की खाई को भरते हुये देशभक्ति के स्वर को जन–जन तक पहुँचाने का उल्लेखनीय कार्य किया। इस युग के प्रमुख साहित्यकारों में प0 प्रतापनारायण मिश्र, बदरीनारायण चौधरी ''प्रेमघन'', ठाकुर जगमोहन सिह, प0 बालकृष्ण भट्ट, सुधाकर द्विवेदी, प0 राधाचरण गोस्वामी, काशीनाथ खत्री, अम्बिका दत्त व्यास, प0 श्रीधर पाठक आदि प्रमुख हैं।

इस युग के साहित्य में भारत भूमि के प्राकृतिक सुषमा के अनेक कलात्मक चित्र मिलते हैं। कवियों द्वारा जनता का जागरण का संचार करने के लिए देश की हीनावस्था का गान किया। इस युग का कवि अभी इतनी शक्ति और साहस नही संजों पाया था, कि वह विरोधी शासकों का विरोध खुलकर कर सकता। लेकिन पराधीनता की बेड़ियों में जकडे हुये भारतीय राजाओ, नवाबों और अमीरों की चाटुकारिता से क्षुब्ध होकर उसकी भर्त्सना के माध्यम से कवि ने विदेशी शासन का विरोध किया। इस दिशा में भारतेन्दु जी का कटु व्यंग्य दृष्टव्य है।

कहाँ सबै राजा कुंवर और अमीर नवाब।
आज राज–दरबार में हाजिर होहु सिताब।।
सिरन झुकाई सलाम करि मुजरा करहू जुहारि।
झटितहू जूतन त्यागि कै, स्वच्छ बूट पग धारि।।[8]

भारतेन्दु ने अंग्रेजो द्वारा देश के आर्थिक शोषण पर आक्रोश प्रकट करते हुये लिखा–

अंग्रेज राज सुख साज सबै सब भारी।
पै धन विदेश चलि जात इहै अति ख्वारी।[9]

भारतेन्दुयुगीन राष्ट्रीयता पर समसामयिकता का प्रभाव अत्यधिक परिलक्षित होता है। फिर भी कतिपय स्थलों पर देशभक्ति, मातृ वन्दना, जनजीवन का चित्रण और सामाजिक दायित्व के निर्वाह के साथ ही भारतमाता के दुर्दशा के चित्र तथा उद्‌बोधन गीतों की पंक्तिबद्धता देखते ही बनती है।

चल चल चरखा तू दिन रात।
तेरे चलने की चर्चा सुनि यूरप जो अकुलात।।
ज्यों ज्यों तू चलता त्यों त्यों आता स्वराज्य नियरात।
उठो–उठो सब कमरन बाँधो शस्त्रन शान थरौरी।।[10]

भारतेन्दु युग में राष्ट्रीय चेतना का बीजोरोपण हुआ था, अतः इस युग के काव्य में राष्ट्रीय विचारधारा के प्रारम्भिक रूप से दर्शन होते हैं। इस काल के कवि राजभक्ति को त्यागकर पूर्णत राष्ट्रभक्ति को अपनाने का साहस नही सजों पाये।

1885 ई0 में कांग्रेस की स्थापना का मुख्य उद्‌देश्य ब्रिटिश सरकार को जनहितकारी सुझाव देना था। ब्रिटिश सरकार ने जब उनके अनुरूप कार्य नहीं किया, तो राजभक्ति का भावना क्षीण पड गयी। परिणामस्वरूप जनमानस में राष्ट्रीयता एवं देशभक्ति की भावना जाग्रत हो उठी। कांग्रेस ने स्वाधीनता को अपना उद्‌देश्य बनाया और द्विवेदी युगीन कवियों ने देशभक्ति और राष्ट्रीयता से अनुप्राणित साहित्य रचकर इस अग्नि में घृत का कार्य किया।

द्विवेदी युग की राष्ट्रीयता का चरमोत्कर्ष मैथिलीशरण गुप्त की भारत भारती में दिखाई देता है। भारतेन्दु युगीन राष्ट्रीयता में जहाँ राजभक्ति का स्वर भी सुनाई देते हैं, वहीं द्विवेदी युग में शुद्ध राष्ट्रीयता की भावना व्याप्त है। इसमें अंग्रेजी शासन के प्रति आक्रोश, विद्रोह और भारतीय जनता की स्वाधीनता के लिए प्रेरक क्रांतिकारी स्वर सुनाई पड़ता है।

द्विवेदी युग में आकर राष्ट्रीय चेतना ने अपेक्षाकृत स्पष्ट और सशक्त रूप धारण किया। प्रथम विश्व युद्ध की घटनाओं और परिणामों ने जनता के राष्ट्रीय दृष्टिकोण को परिपुष्ठ करने एवं उसे व्यापक बनाने में सहायता दी। अंग्रेज शासकों पर उसे तनिक भी विश्वास नही रह गया था। अब उसे भारतीय और विदेशी जीवन पतित और राष्ट्रीय गुणों को भी जानने समझने और तुलना करने का अवसर मिलने लगा था।

अतीत की तुलना में वर्तमान दुर्दशा की अनुभूति अत्यन्त तीव्र है। भारत भारती में गुप्त जी ने देश की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति की श्रेष्ठता का उल्लेख करते हुए परोक्ष रूप से विदेशी शासकों की कुटिल नीति की भर्त्सना की है। अतीत गौरव के आलोक में कवि वर्तमान दुरावस्था की कालिमा को नही भूल पाया है।

वीरवर जयमल्ल, पुत्त प्रताप पृथ्वीराज से
मान गौरव के बढावन हार थे जिस देश के।
हुए रिपु भी मुग्ध जिनकी देख बल शालीनता
प्राण रहते जिन्होने छोड़ी नहीं ''स्वाधीनता''।
दासता सुनते ही जिनके क्रोध की सीमा न थी
आज उनके वंशधर हो दास बन बैठे सभी।[11]

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 2, Year : 4, Jul.-Aug-Sep. (2017), Pages : 142-146 , ISSN 2348 – 3318
कमलेश कुमार मिश्र
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

राष्ट्रीय चेतना के भावात्मक पक्ष में स्वदेशी आन्दोलन के प्रसार से सम्बन्धित कविता को लिया जा सकता है। विदेशी प्रभाव को स्पष्ट करने के लिए जनता को स्वदेशी प्रयोग के लिए प्रोत्साहित किया गया। माधव शुक्ल ने राष्ट्र भाषा के गौरव को जगाने का प्रयत्न किया। इसके अतिरिक्त राष्ट्रध्वज को राष्ट्र के सम्मान का प्रतीत मानकर इसकी रक्षार्थ उद्‌बोधित किया गया। माधव शुक्ल ने बलिदान होने के लिए भारतवासियों का आह्‌वान किया।

फाँसी चढो, जेल में जाओ, भयवश कभी ना देश भुलाओ,
हथकड़ियों पर मिलकर गाओ स्वतंत्रता का गान।
जवानो उठो हिन्द सन्तान।।[12]

वीरगाथा काल से उद्‌भासित राष्ट्रीयता का स्वर द्विवेदी काल की परिसीमा में संकुचित आवरण छोड विस्तृत भाव भूमि पर साँस लेता हुआ जातीयता और सम्प्रदायवाद से परे हटकर एकता और अहिंसा की ओर कदम बढाता हुआ लक्षित होता है। इस युग के प्रवर्तक द्विवेदी जी के सद्‌प्रयत्नों से हिन्दी काव्य में राष्ट्रीयता और सामाजिकता का स्वर अपने चरम शिखर पर पहुँच गया था।

द्विवेदी युग में अतीत का गौरव गान गाते हुए वर्तमान के प्रति क्षोभ और आक्रोश उगलकर वीरपूजा और प्रशस्ति के मार्ग पर बढ़ रहे कवि ने राष्ट्रवाद का शखंनाद किया, जिसके परिणाम में जीवन और जागृति, बल और बलि तथा सत्य और अहिंसा के गीत गाये जाने लगे। द्विवेदी युग में महावीर प्रसाद द्विवेदी, माधव शुक्ल, श्रीधर पाठक, मैथिलीशरण गुप्त, चन्द्रधर शर्मा ''गुलेरी'' अयोध्या सिंह उपाध्याय, ''हरिऔध'' ठाकुर गोपाल शरण सिंह गया प्रसाद शुक्ल ''स्नेही'' मुकुटधर पाण्डेय, राम नरेश त्रिपाठी आदि के रचनाओं में राष्ट्रीयता स्पष्ठ परिलक्षित होती है ।

द्विवेदी युग का कवि देश और उसके नागरिक में कोई अंतर ना समझकर उद्‌घोष करता है–

मेरा देश देश का मै देश मेरा जीवन प्राण।
मेरा सम्मान देश की बड़ाई में।
जीऊँगा स्वदेश हित मरूँगा स्वदेश काज।
देश के लिए न कभी करूँगा बुराई मैं।[13]

द्विवेदी युग में राष्ट्रवादिता का समुचित विकास हो चुका था। इस युग के कवि ने आशा व कर्म से युक्त राष्ट्रीयता को प्रेरणा दी। वस्तुतः अंग्रेजों की दमनकारी नीति की कठोरता के प्रतिक्रियास्वरूप कवियों की राष्ट्रीय विचारधारा और भी सुदृढ होती गयी, यही कारण है कि इस काल के काव्य में जागरण का स्पंदन है, सृजन और निर्माण की चेतना है। ओज, शक्ति और गति से पूर्ण यह काव्य परवर्ती युग की राष्ट्रीय चेतना के लिए सुदृढ़ आधार सिद्ध हुआ।

छायावाद में भी राष्ट्रीय काव्यधारा से सम्बन्धित काव्य खूब रचा गया। इस युग के राष्ट्रीय काव्यधारा के कवियो में नरेन्द्र शर्मा, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान, सोहन लाल द्विवेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', श्याम नारायण पाण्डेय, सियाराम शरण गुप्त, जानकी बल्लभ शास्त्री आदि प्रमुख हैं।

छायावाद युग में राष्ट्रीय आन्दोलनों पर सामाजिक असन्तोष की भावना का व्यापक असर पडा है। फलस्वरूप विश्व मानवतावाद और गाँधीवाद के प्रभाव परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय सांस्कृतिक कविता का बाना पहनकर विविध रूपों में मुखरित हुई। सन् 1920–21 ई0 के देशव्यापी असहयोग आन्दोलन से रूसी क्रान्ति तथा मजदूर किसानो के एवं युवकों के संगठित होकर मुक्ति संघर्ष के सक्रिय अंग बनने में राष्ट्रीय चेतना ने एक नई करवट लेकर विद्रोह भावना को एक गौरव का विषय बना दिया। फलतः स्वच्छन्दवादी प्रवृत्तियों और विद्रोह के स्वर ने तूल पकड़ा।

छायावाद कालीन राष्ट्रीय काव्य में जहाँ पराधीनता और दमन के विरूद्ध प्रबल संघर्ष का स्वर अहिंसक रूप में भी अपनी छठा बिखराये हुए है। बलि और प्राणोत्सर्ग का गीत गाते हुए कवि उस पथ पर शीश चढ़ाने को तत्पर है, जहाँ अनेक वीर प्रयाण कर रहे हों, बलिपथ के ये राही मस्तक दान, प्राण दान, जीवन दान,विभिन्न रूपों में करने को तत्पर है, क्रान्ति का संदेश सुनाने को उत्सुक हैं–

हो जहाँ बलि शीश अगणित।
एक सिर मेरा मिला लो।
वंदना के इन स्वरों में ।
एक स्वर मेरा मिला लो।[14]

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल पुथल मच जाए।
एक हिलोर इधर से आए एक हिलोर उधर से आए।
प्राणों के लाले पड जाऐ, त्राहि त्राहि मन में छाए
नाश और सत्यानाशों का धुवांधार जग में छा जाए।[15]

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 2, Year : 4, Jul.-Aug-Sep. (2017), Pages : 142-146 , ISSN 2348 – 3318
कमलेश कुमार मिश्र
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

इस युग में सार्वभौमिकता और सार्वकालिकता को अपने गीतों में आश्रय देकर ''प्रसाद जी ने अनेक सुन्दर राष्ट्रीय गीतों की रचना की–

अरूण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।[16]

स्पष्टतया विभिन्न आयामों में राष्ट्रीयता छायावाद की प्रखर भावभूमि पर पल्लवित हुई है, जो अपनी पूर्वकालीन राष्ट्रीयता से कही अधिक ठोस स्पष्ठ और शाश्वत है।

सन् 1936 से भारत की स्वतंत्रता तक यह राष्ट्रीय काव्यधारा शाश्वत गतिमान रही, जिसने राष्ट्रवादी भावनाओं को प्रखर करने का कार्य किया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि चारण काव्य के बाद वस्तु जगत को नवीन पुरूषार्थ राष्ट्रीय काव्य से मिला। जो वस्तु जगत पहले जातीय परिधि में था, वह राष्ट्रीय परिधि में आ गया। भारतीय राष्ट्रीयता को पोषित करने में हिन्दी राष्ट्रवादी काव्य की महत्ति भूमिका है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. शुभ लक्ष्मी–आधुनिक हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय चेतना पृ0–11
2. शुभ लक्ष्मी–आधुनिक हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय चेतना पृ0–10
3. डॉ0 मधुमुकुल चतुर्वेदी – राष्ट्र एवं राष्ट्रवाद पृ0 96
4. बाबू गुलाबराय–साहित्य संदेश में प्रकाशित लेख 1951 पृ0 118
5. सुरेन्द्र यादव–माखन लाल चतुर्वेदी के काव्य में राष्ट्रीयता, शोध प्रबन्ध–पृ0 11
6. डॉ0 लक्ष्मीनारायण दुबे– राष्ट्रवादी –पृ0 161–62
7. विश्वनाथ मिश्र–हिन्दी साहित्य का अतीत–पृ0 700
8. रामचन्द्र शुक्ल–हिन्दी साहित्य का इतिहास– पृ0 591
9. सुरेन्द्र यादव– माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में राष्ट्रीयता पृ0 15
10. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र–भारतेन्दु ग्रन्थावली भाग–1 पृ0 469
11. माधव शुक्ल–हिन्दी प्रदीप, पृ0 12
12. माधव शुक्ल–भारत गीतांजलि(आह्वान) पृ0 35
13. गिरधर शर्मा 'नवरत्न', हिन्दी की राष्ट्रीय काव्यधारा पृ0 75
14. डॉ0 रामखिलाड़ी तिवाड़ी–माखनलाल चतुर्वेदी व्यक्ति और काव्य पृ0 75
15. सोहन लाल द्विवेदी– राष्ट्रीय कविताऐं पृ0 55
16. जयशंकर प्रसाद, चन्द्रगुप्त–द्वितीय अंक पृ0 57